सत्र 6

कहानियों से प्रेरित

- रणनीतियों से सशक्त

रणनीतियों पर चर्चा

रणनीति और कहानी के पोस्टर

THE LOCAL
CHANGEMAKERS
COURSE

मानव अधिकार को बढ़ावा देने हेतु रणनीतियां

आपातकालीन रणनीतियां

हम मानव अधिकार के उल्लंघन से निपटने के लिए आपातकालीन रणनीतियों का उपयोग करते हैं, जो विशेष लोगों के साथ, विशेष स्थानों पर होने वाले हैं या अभी हो रहे हैं. आपातकालीन रणनीतियों का उपयोग आसन्न दुर्व्यवहारों की रोकथाम के लिए, जारी दुर्व्यवहारों को रोकने तथा प्रभावितों को बचाने के लिए और मदद बुलाने या लोगों को खतरे की चेतावनी देने के लिए किया जाता है.

आपातस्थितियाँ हमेशा बड़े पैमाने की हों ऐसा ज़रूरी नहीं - काम पर जाते समय बस में नफ़रती बोली का शिकार होना भी प्रभावित व्यक्ति के लिए एक आपात स्थिति ही है.

FORB ‘आपातकाल’ के उदाहरण
उत्पीड़न, नफरत भरे भाषण और नफरत से उपजे अपराध - जैसे ऑनलाइन या आमने-सामने होने वाले शाब्दिक हमले, हिंसा के लिए उकसाना, शारीरिक हमले, संपत्ति की तोड़फोड़, धार्मिक संस्थान पर आक्रमण, साम्प्रदायिक हिंसा एवं मनमाने ढंग से गिरफ्तार करना.

रणनीति
निवारक उपाय

रोकथाम की रणनीतियों के तहत, विशिष्ट परिस्थितियों में दुर्व्यवहारों को होने से रोकने की कोशिशें की जाती हैं. समुदायों और नागरिक समाज संगठनों के लिए इसका मतलब अक्सर यह होता है कि वे अपनी भौतिक मौजूदगी स्पष्ट रूप से दिखाएँ ताकि दुर्व्यवहार करने वालों के हौसले पस्त हों. इसके लिए, आपको हमले के जोखिम में मौजूद लोगों के संग-संग रहना/जाना पड़ सकता है ताकि संख्या बल के सहारे सुरक्षा दी जा सके, या फिर उन लोगों के संग-संग पुलिस स्टेशन तक जाना पड़ सकता है ताकि अधिकारियों को पता रहे कि उन पर आपकी नज़र है और आप उनकी रिपोर्ट कर रहे हैं.

प्राधिकारी वर्ग के लिए इसके अंतर्गत निगरानी एवं सूचित करने की आंतरिक प्रणालियां स्थापित करना शामिल होता है ताकि अधिकारियों द्वारा अधिकारों के दुरूपयोग या उनकी विफलता की घटनाएं सामने आ सकें और उनके संबंध में उपयुक्त कार्यवाही हो.

मैकसम वाच की एक सदस्य, एक इजरायली सैनिक से बात करते हुए. फोटो एडी जेरल्ड (EDDIE GERALD) /ALAMY STOCK PHOTO

इजरायइली सेना की चौकी पर गवाह

सन् 2001 में तीन इजरायली महिलाओं ने तय किया कि वे इजरायली सेना की एक चौकी की निगरानी कर यह देखेंगी कि सैनिक कैसा व्यवहार करते हैं. उन्हें आशा थी कि यह उन फिलिस्तनियों के अधिकारों का उल्लंघन रोकने में सहायक होगा, जो कब्जे वाले वेस्ट बैंक और इजराइल के बीच आते-जाते हैं. उनकी इस पहल ने अंततः मैकसम वाच नामक एक संस्था का स्वरुप ले लिया जिसमें अब 300 महिला स्वयंसेवक हैं जो प्रतिदिन अनेक चौकियों की निगरानी करती हैं.

जब सैनिक लोगों को पार जाने से रोकने की या ID कार्ड ज़ब्त करने की कोशिश करते हैं तो वे उन पर चुपचाप नज़र रखती हैं, लेकिन वे दृढ़ता से हस्तक्षेप भी करती हैं अगर उन्हें लगता हो कि इससे फ़र्क पड़ सकता है. जब वे गंभीर उल्लंघन होते देखती हैं तो वे ऊँची रैंक वाले सैन्य अधिकारियों से शिकायतें करती हैं और फ़िलिस्तीनियों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करती हैं. वे प्रेक्षित दुर्व्यवहारों की विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित करती हैं.

स्रोत: न्यू टैक्टिक्स इन ह्यूमन राइट्स, www.newtactics.org

उत्तरी आयरलैंड में रिपब्लिकन और लॉयलिस्ट इलाकों को अलग करने वाली एक 'शांति की दीवार'. **फोटो** एंड्रयू पार्सन्स (ANDREW PARSONS) / ALAMY STOCK PHOTO

दीवार के ऊपर से बातचीत, उत्तरी आयरलैंड

प्रोटेस्टेंट यूनियनिस्ट (जो चाहते हैं कि उत्तरी आयरलैंड UK में ही रहे) और कैथलिक आयरिश रिपब्लिकन के बीच 30 वर्षों तक चली राजनीतिक हिंसा, जिसे 'द ट्रबल्स' नाम दिया गया है, में 3,500 से भी अधिक लोगों की मौत हुई. ये समुदाय अलग-अलग रहते हैं, कभी-कभी इनके बीच 3 से 8 मी ऊँची 'शांति की दीवारें' मौजूद होती हैं जो हिंसा को कम-से-कम रखने का लक्ष्य रखती हैं.

द ट्रबल्स (1968-1998) के दौरान, दीवार के दूसरी ओर क्या हो रहा है इस बात की शंका हिंसा को जन्म दे सकती थी. इंटरेक्ट बेलफ़ास्ट (Interact Belfast) ने दीवार के दोनों ओर स्वयंसेवकों का एक नेटवर्क तैयार किया और उन्हें एक-दूसरे से बात करने के लिए मोबाइल फोन दिए. विकसित होती स्थितियों के बारे में चेतावनी देने और जानकारी साझा करने के लिए स्वयंसेवक एक-दूसरे को कॉल करते थे. फिर वे सही जानकारी फैलाते थे, जिससे शंकाएँ घटती थीं तथा हिंसा की रोकथाम होती थी, विशेष रूप से राजनीतिक परेडों जैसी संवेदनशील घटनाओं के दौरान.

स्रोत: न्यू टैक्टिक्स इन ह्यूमन राइट्स, www.newtactics.org

रणनीति
रोकें और बचाएं

रोकने और बचाने की रणनीति में हनन की घटनाओं को उनके होने के दौरान सीधा हस्तक्षेप करके रोकना और जिन लोगों पर खतरा हो उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाना शामिल है.

नफ़रती भाषण देने या उत्पीड़न करने में लगे लोगों को चुनौती देना या उनका ध्यान बँटाना दुर्व्यवहार को होने से रोकने का एक तरीका है - सार्वजनिक जगहों पर भी और ऑनलाइन भी. अन्य उदाहरणों में शामिल हैं दुर्व्यवहार रोकने के लिए भौतिक बाधाएँ खड़ी करना, जैसे जोखिम में पड़े धार्मिक संस्थान के इर्द-गिर्द मानव शृंखलाएँ बनाना या हिंसक भीड़, लड़ाकों या सेना का आगे बढ़ना धीमा करने के लिए वाहनों को रास्ते पर छोड़ना. इन युक्तियों में अक्सर जोखिम
होते हैं.

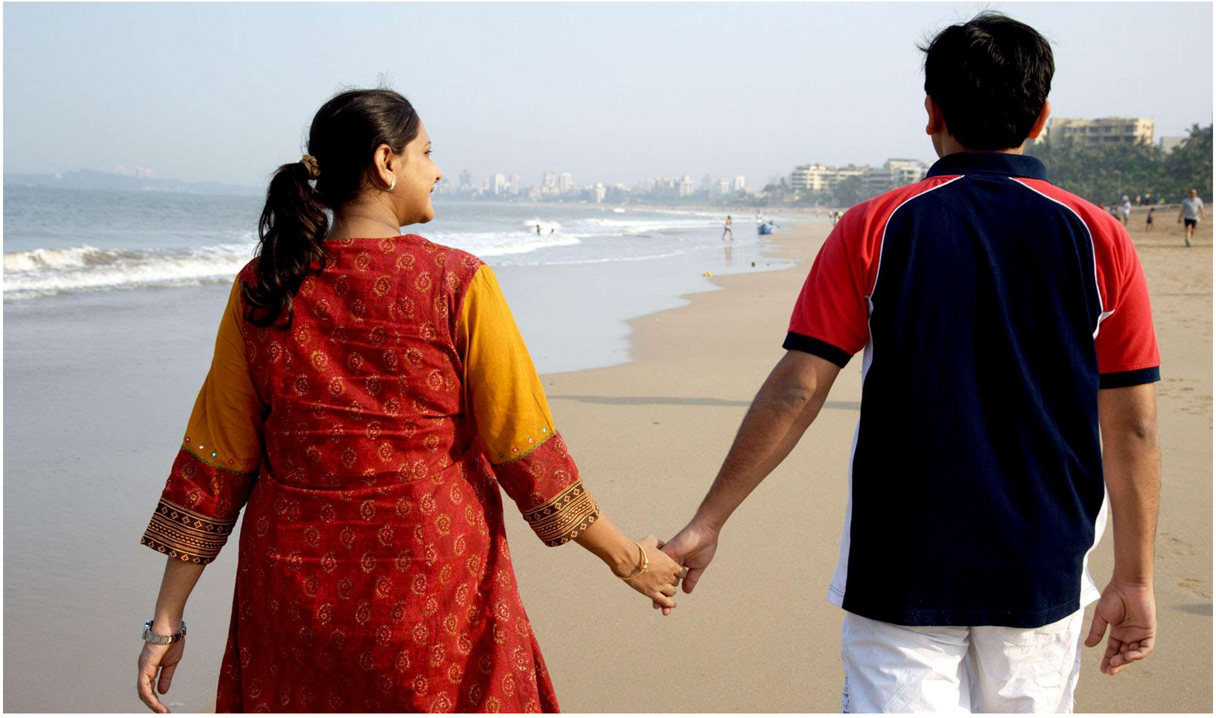

तस्वीर आर.एम. मोदी (R.M. Modi) / Alamy Stock Photo

अंतरधार्मिक जोड़ियों की सुरक्षा, भारत

भारत में परंपरागत जाति प्रथा लोगों को चार वर्णों में बांटती है जिनका दर्जा अलग-अलग होता है. इसके अलावा दलित (जाति बहिष्कृत) समुदाय भी होता है. अन्तर्जातीय एवं अन्तर्धार्मिक विवाहों पर कठोर आपत्ति की जाती है. कानूनन अन्तर्धार्मिक विवाहों को विवाह के 30 दिन पहले पंजीकृत करवाना होता है और सम्बंधित पुरुष और के परिवारों को इसकी सूचना दी जाती है. कई दम्पत्ति इस अवधि में परिवारजनों के हिंसक हमले की आशंका से भयग्रस्त रहते हैं. कुछ राज्यों ने 'विवाह के माध्यम से धर्मांतरण' को कानून बनाकर प्रतिबंधित कर दिया है जिससे दम्पत्तियों को गिरफ्तार किए जाने का खतरे का सामना करना पड़ता है.

'राईट टू लव' अन्तर्जातीय एवं अन्तर्धार्मिक दम्पत्तियों के संरक्षण का अभियान है. इसके अंतर्गत इन दम्पत्तियों को पुलिस की सुरक्षा एवं सुरक्षित आवास, विवाह के पंजीयन हेतु विधिक सहायता एवं तनाव का सामना करने के लिए परामर्श सेवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं. इसे स्वैच्छिक आधार पर दो पत्रकार संचालित कर रहे हैं.

स्रोत: Newsclick, www.newsclick.in

रणनीति

सहायता मांगें और सचेत करें

अक्सर, हम में खुद किसी उल्लंघन की रोकथाम करने या उसे रोकने की शक्ति नहीं होती है. हमें ऐसे लोगों को मदद के लिए बुलाना पड़ सकता है जिनका आवश्यक प्रभाव है और उन लोगों को चेतावनी देनी पड़ सकती है जो खतरे में हैं, ताकि वे सुरक्षित जगह ढूँढ सकें.

हमें समुदाय के नेताओं, जिनमें स्थानीय और राष्ट्रीय धार्मिक नेता शामिल हैं, से - उदाहरण के तौर पर समुदाय में तनाव या हिंसा घटाने के लिए - मदद माँगनी पड़ सकती है. यदि कोई सरकारी अधिकारी उल्लंघन कर रहा है या किसी उल्लंघन को रोकने के लिए हस्तक्षेप नहीं कर रहा है, तो मदद के लिए हमें क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर के राजनेताओं या अधिक वरिष्ठ अधिकारियों से हस्तक्षेप करने को कहना पड़ सकता है. हम मदद माँगने और अधिकारियों पर हस्तक्षेप करने का दबाव बनाने के लिए मीडिया का भी उपयोग कर सकते हैं.

फोटो मातियस रीहाक (MATYAS REHAK) / ALAMY STOCK PHOTO

दंगा टालने के लिए मदद की गुहार, भारत

सन् 2007 में हिन्दू राष्ट्रवादियो ने हरियाणा राज्य के पानीपत शहर में साम्प्रदायिक दंगा भड़काने का प्रयास किया. उन्होंने चोरी-छिपे हिन्दू देवताओं की मूर्तियां एक मस्जिद के अंदर रख दीं ताकि मस्जिद के हिन्दू अराधना स्थल होने का दावा किया जा सके क्योंकि उसमें हिन्दू देवता 'प्रकट' हुए हैं, उसे एक मंदिर में परिवर्तित किया जा सके और दंगा भड़काया जा सके.

मूर्तियां नजर आते ही मस्जिद के कर्ताधर्ताओं को खतरे का एहसास हो गया और उन्होंने तुरंत भगत सिंह से दोस्ती नामक एक संस्था से संपर्क किया जो शहर में अन्तर्धामिक संवाद एवं शांति को बढ़ावा देने का कार्य करती है. उन्होंने मिलकर मुस्लिम समुदाय के लोगों से शांति बनाए रखने और विरोध न करने की अपील की क्योंकि ऐसा करने की हिंसक प्रतिक्रिया हो सकती थी. अन्तर्धामिक संस्था ने मूर्तियां हटाने के लिए हिन्दू समुदाय के नेताओं को इकट्ठा किया. मूर्तियां सम्मानपूर्वक हटा दी गईं और दंगा टल गया.

स्रोतः सेंटर फ़ॉर द स्टडी ऑफ़ सोसायटी एंड सेकुलरिज़्म एंड एड. राम मोहन राय

द वाइट रोज़ अभियान, म्याँमार. **फोटो** BHRN

एकजुटता ने किया अधिकारियों को कदम उठाने पर मज़बूर, म्याँमार

2019 में 100 से भी अधिक बौद्ध चरम-राष्ट्रवादियों की एक हथियारबंद भीड़ ने यांगोन में रमजान के दौरान आधिकारिक रूप से स्वीकृत तीन अस्थायी नमाज़गाहों में एकत्र हो रहे मुस्लिमों को धमकाया. स्थानीय मुस्लिम नेताओं को मज़बूर करके उनसे इस बयान पर हस्ताक्षर कराए गए कि वे नमाज़ के लिए लोगों को इकट्ठा नहीं करने पर सहमत हैं और फिर, भीड़ के दबाव के कारण, स्थानीय अधिकारियों ने नमाज़गाहें बंद कर दीं. कार्यकर्ताओं और रसूखदार बौद्ध भिक्षुओं ने तुरंत प्रतिक्रिया देते हुए प्रभावित मुस्लिम समुदायों का दौरा किया और एकजुटता के प्रतीक के रूप में उन्हें सफ़ेद गुलाब दिए. द वाइट रोज़ अभियान, जिसका नेतृत्व मुख्य तौर पर युवा बौद्ध कार्यकर्ताओं ने किया था, ने सोशल मीडिया के ज़रिए रफ़्तार पकड़ ली और वह अन्य कस्बों और शहरों तक फैल गया. इस बीच, रिलीजन्स फ़ॉर पीस, म्याँमार के नेताओं ने धार्मिक मामले एवं संस्कृति मंत्रालय से संपर्क करके उनसे नमाज़गाहें दोबारा खोलने का आग्रह किया जिसे 24 घंटों के भीतर मान लिया गया.

स्रोत: क्याॅ विन (Kyaw Win), बर्मा ह्यूमन राइट्स नेटवर्क, bhrn.org.uk

बदलाव की रणनीतियां

हम बदलाव की रणनीतियों का उपयोग निर्णयकर्ताओं को प्रभावित करने के लिए करते हैं. निर्णयकर्ता वह व्यक्ति होता है, जिसके पास नियमों, नीतियों और कार्यप्रणाली में बदलाव लाने की शक्ति होती है. निर्णयकर्ता सरकार में (परंपरागत नेताओं सहित), सार्वजनिक संस्थाओं जैसे स्कूलों, अस्पतालों आदि में या न्याय प्रणाली और आस्था आधारित समुदायों एवं व्यापारी समुदाय में हो सकते हैं.

बदलाव की रणनीतियां निर्णयकर्ताओं पर उन मानव अधिकार संबंधी समस्याओं को हल करने का दबाव डालती हैं जिन पर वे प्रभाव रखते हैं. ये युक्तियाँ समस्याओं के बारे में जनता की चिंता की शक्ति पर प्रकाश डालती हैं और समाधान सुझाती हैं.इनका उपयोग अक्सर ऐसे दीर्घकालिक मानवाधिकार के उल्लंघन से निपटने में किया जाता है जो समाज के काम करने के तरीके में मौजूद होते हैं, जैसे कानूनों, नीतियों और काम करने के तरीकों में बदलाव लाकर.

बदलाव की रणनीतियां चार प्रकार की होती हैं: प्रचार-अभियान, समर्थन, प्रोत्साहन व अवहेलना.

रणनीति
अभियान

प्रचार-अभियानों में आम लोग बदलाव का दबाव बनाने के लिए बड़ी संख्या में एकजुट होकर कदम उठाते हैं. इसमें जनता से मानव अधिकार से संबंधित दुर्व्यवहारों का विरोध अधिकतम संभव दृश्य रूप में कराया जाता है और हम जो समाधान सुझाते हैं उसे मिल रहे जन-समर्थन पर प्रकाश डाला जाता है. मीडिया का ध्यान खींचना प्रचार-अभियान रणनीतियों का एक मुख्य भाग है. जनमत पर प्रकाश डालने और प्रचार-अभियानों में जनता को शामिल करने हेतु एकजुट करने के लिए सोशल मीडिया एक मुख्य टूल हो सकता है.

अभियान चलाने में सभी प्रकार के विरोध शामिल हैं: याचिकाओं और पत्रों का लेखन, सड़क पर विरोध दर्ज करना, सड़क पर गीत गाकर या सार्वजनिक स्थानों पर पेटिंग, कार्टून आदि बनाकर उसके माध्यम से आपत्ति दर्ज करवाना, किसी विशिष्ट रंग के कपड़े पहनने या हाथों से विशिष्ट मुद्राएं बनाने जैसे प्रतीकात्मक कार्यवाहियां या घरों में सुरक्षित रहते हुए समन्वित कार्य - जैसे दिन के किसी निश्चित समय पर लाईटें बंद करना या बर्तनों को पीटना - करना.

दिल्ली की सड़कों पर विरोधस्वरूप बनाई गई कलाकृति.

फोटो सुदीप्ता दास (SUDIPTA DAS) / ALAMY STOCK PHOTO

कलाकारों द्वारा नागरिकता कानूनों का विरोध, भारत

भारत सरकार ने एक नया कानून पेश किया है जो हर किसी के लिए यह साबित करना आवश्यक करता है कि वह नागरिक है. जो भी व्यक्ति यह साबित नहीं कर सकता, उसकी नागरिकता छीनी जा सकती है और उसे कैद किया जा सकता है. बहुत से गरीब लोगों के पास ज़रूरी जन्म प्रमाणपत्र नहीं होते हैं. कानून सभी पर लागू है, पर एक और कानून है जो उन अल्पसंख्यकों को नागरिकता देता है जो पड़ोसी मुस्लिम-बहुल देशों में अत्याचार के जोखिम में हैं, जैसे हिंदू, सिख और ईसाई. दोनों कानूनों को साथ मिलाकर देखें तो पता चलता है कि गरीब मुस्लिम नागरिकता खोने और कैद किए जाने के जोखिम में हैं.

सारे भारत में कलाकारों ने इन नए कानूनों का व्यापक विरोध किया. उन्होंने सार्वजनिक स्थानों पर पोस्टर लगाए, भित्तिचित्र बनाए एवं लोहे की जाली से बने भारत के विशाल नक्शे पर विरोध करने वालों की मांगें.

स्रोत: अल जज़ीरा

रणनीति
समर्थन

समर्थन का संबंध समझाने-बुझाने से है जो शांतिपूर्वक, प्रायः बंद दरवाजों के पीछे, बातचीत के माध्यम से होता है. यह विशिष्ट परिवर्तनकामी प्रस्तावों या विशिष्ट कार्यवाही हेतु निर्णयकर्ताओं का समर्थन हासिल करने पर केन्द्रित होता है. सफल समर्थन, निर्णकर्ताओं से परस्पर विश्वास के संबंध कायम करने पर आधारित होता है जो लंबे समय में बनते हैं. राजी करने का प्रयास करने वाले का प्रभाव एवं स्वीकार्यता जितनी अधिक होगी सफलता की संभावना भी उतनी ही अधिक होगी.

जिन तर्कों के माध्यम से निर्णयकर्ताओं को राजी करने में मदद मिल सकती है उनमें निम्न का समावेश हो सकता है:

- समस्या के समाज पर पड़ रहे नकारात्मक प्रभावों के प्रमाण साझा करना और प्रस्तावित हल कैसे अन्य स्थानों पर सफल रहा यह जानकारी देना
- यह समझाना कि यदि समस्याओं को बने रहने दिया गया तो उससे निर्णयकर्ता या उनकी संस्था के लिए क्या खतरा हो सकता है, जैसे नाम ख़राब होना.
- यह बताना कि बदलाव की पहल करना किस प्रकार निर्णयकर्ताओं के लिए राजनैतिक दृष्टि से लाभप्राध या उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले हो सकता है.
- यह बताना कि समाज के हितों का संरक्षण करने की निर्णयकर्ता की नैतिक या वैधानिक ज़िम्मेदारी कितनी महत्वपूर्ण है.

संसद भवन, किर्गिज़स्तान. फोटो ROBERT WYATT (रॉबर्ट वायट) / ALAMY STOCK PHOTO

धार्मिक नेता संसद पर प्रभाव डालने के लिए हुए एकजुट, किर्गिजस्तान

जब 2012 में किर्गिजस्तान में धर्म संबंधी कानूनों में परिवर्तन प्रस्तावित किए गए तब छह सबसे बड़े धार्मिक समुदायों के नेताओं ने इसका प्रतिकार करने का फैसला किया. पूर्व में धर्म या आस्था की आजादी (FORB) संबंधी प्रशिक्षण प्राप्त होने के कारण इन नेताओं को यह ज्ञान था कि ये प्रस्ताव FORB के कई पहलुओं का हनन करते हैं और इनसे विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच तनाव उत्पन्न होने का खतरा है. इन छह धार्मिक समुदायों ने राज्य के धार्मिक मामलों के आयोग और संसद को एक संयुक्त पत्र लिखा और उनसे प्रस्तावित संशोधनों को अस्वीकार करने को कहा. सांसदों ने इस संयुक्त पत्र पर विचार करने के पश्चात संशोधनों के विरूद्ध मतदान किया.

स्रोत: व्लादिस्लाव हीगे (Vladislav Hegay), इंटरफ़ेथ काउंसिल ऑफ़ किर्गिज़स्तान

सरकार द्वारा प्रायोजित गुंडे मठ पर हमला करते हुए. तस्वीर BPSOS

स्थानीय समुदायों हेतु अंतर्राष्ट्रीय समर्थन, वियतनाम

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नागरिक समाज को जोड़ना, स्थानीय आस्था समुदायों के अधिकारों के रक्षण हेतु अभियान एवं समर्थन की सफलता में योगदान दे सकता है. वियतनाम में स्थानीय प्राधिकारी पिछले चालीस सालों से थीन अन एबी नामक एक कैथोलिक मठ की 107 हेक्टेयर भूमि, जिस पर देवदार के वन थे, से उसे बेदखल करने का प्रयास कर रहे थे. जमीन पर कब्जा करने का यह अभियान हाल के वर्षों में और सघन हो गया क्योंकि पर्यटन एवं प्रॉपर्टी डेवलपमेंट अधिक लाभप्रद हो गया.

सन् 2020 में स्थानीय सरकार द्वारा जुटाए गए भाड़े की एक भीड़ ने बची हुई 59 हेक्टेयर भूमि पर कब्जा करने के इरादे से एबी को घेर लिया और भिक्षुओं और पुजारियों पर हमला किया. सरकारी टीवी चैनल ने भी मठ के बारे में झूठी और मानहानि करने वाली खबरें प्रसारित कीं. इसके प्रत्युत्तर में बीपीएसओएस नामक प्रवासी वियतनामियों के एक संगठन के नेतृत्व में एक अंतर्राष्ट्रीय पक्षपोषण एवं मीडिया अभियान चलाया गया जिसके फलस्वरूप हमलावर भीड़ को वहां से हटना पड़ा और मठ को सशक्त अंतर्राष्ट्रीय समर्थन मिला.

स्रोत: BPSOS, www.bpsos.org

फोटो PACIFIC PRESS MEDIA PRODUCTION CORP. / ALAMY STOCK PHOTO

दफनाए जाने के अधिकार के लिए अभियान, श्रीलंका

विश्व स्वास्थ्य संगठन के यह कहने के बावजूद कि कोरोना के शिकार हुए लोगों को दफनाने में कोई खतरा नहीं है, अप्रैल 2020 में श्रीलंका में यह फैसला किया गया कि सभी मृत कोविड पीड़ितों के शव जलाये जाएंगे. इस्लाम में शवों को जलाने पर पाबंदी है. मार्च 2021 तक कोविड-19 से मरने वालों में से दो-तिहाई अल्पसंख्यक समुदायों के थे. कई लोगों ने इस भय से इलाज नहीं करवाया कि यदि जांच में वे कोरोना पीड़ित पाए गए तो मृत्यु होने पर उनके शव को जलाया जाएगा.

इस नियम की प्रतिक्रिया में राजनैतिक दलों, वकीलों, इस्लामिक संगठनों एवं सभी धर्मों के नागरिक समाज कार्यकर्ताओं ने कानून के खिलाफ याचिकाएं प्रस्तुत कीं. लगातार प्रदर्शन आयोजित किए और ग्यारह परिवार इस प्रकरण को सर्वोच्च न्यायालय में ले गए. एक छोटी बच्ची के शव को जबरन जलाए जाने से जनमत और प्रबल हुआ और सभी धर्मों के लोगों ने संबंधित श्मशान के दरवाजे पर सफेद बैंड बांधे.

स्रोत: BBC news, Alarabiya.net

रणनीति
प्रोत्साहन

प्रोत्साहन की रणनीति से व्यक्तियों एवं संस्थाओं - जैसे स्कूलों, व्यापारियों और सरकारी अधिकारियों - के लिए सही चीज को चुनने को प्रोत्साहन देना आसान हो जाता है. प्रोत्साहन आर्थिक भी हो सकता है या प्रतिष्ठा व मान्यता को बढ़ाने वाला भी.

उदाहरण के लिए, डराने-धमकाने की घटनाओं या भेदभाव को रोकने और घृणा का मुकाबला करने में शिक्षकों, स्कूल परिषदों, व्यापारियों या आस्था समुदायों के नेताओं के योगदान को मान्यता देने के लिए पुरस्कार प्रदान करने से इन लक्ष्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता बढ़ती है.

तस्वीर फ़्रेडरिक स्टार्क (Friedrich Stark) / Alamy Stock Photo

एफजीएम समाप्त करने को प्रोत्साहन, सिएरा लियोन

यद्यपि अब यह प्रथा गैर-कानूनी है परन्तु अनुमान है कि सिएरा लियोन में लगभग 90 प्रतिशत महिलाओं के जननांगों का खतना (एफजीएम) किया गया है. यह एक परंपरागत सांस्कृतिक प्रथा है जिसकी जड़ें इस्लाम और ईसाई धर्म से भी प्राचीन हैं.

जमीनी स्तर के प्रचारक समुदायों के सदस्यों को बता रहे हैं कि एफजीएम स्वास्थ्य के लिए खतरा है. प्रचारक 'सोवीस' के नाम से जानी जाने वाली इस प्रथा का पालन कराने वाली स्थानीय ग्रामीण महिलाओं की भूमिका को देखते हुए उसमें परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं. लक्ष्य है इन महिलाओं को आय के वैकल्पिक साधन उपलब्ध करवाकर और परंपरागत संस्कृति के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका की पुनर्रचना कर उन्हें प्रथा का पालन इस तरह से करने के लिए प्रेरित करना जिसमें अंग को काटा न जाए.

स्रोत: The Lancet

रणनीति
अवहेलना

कभी-कभी सरकारें और धार्मिक या अन्य शक्तिधारी लोग, लोगों को उनके मानव अधिकार का शांतिपूर्ण उपयोग करने नहीं देते हैं. अवहेलना के तहत हम नियमों और अनौपचारिक या कानूनी सीमाबंधनों अथवा प्रतिबंधों के बावजूद हमारे मानव अधिकार का खुलकर उपयोग करते हैं. गैर-कानूनी विरोध प्रदर्शन इसका शायद सबसे आम उदाहरण हैं. अवहेलना के अन्य उदाहरणों में शामिल हैं ऐसे धार्मिक समुदाय जो गैर-कानूनी प्रतिबंधों के बावजूद उपासना के लिए मिलना जारी रखते हैं, ऐसी अंतरधार्मिक जोड़ियाँ जो प्रतिबंधों के बावजूद विवाह करती हैं और शांतिपूर्ण किंतु प्रतिबंधित विचारों (जैसे, कुछ परिस्थितियों में नास्तिक आस्था) की खुली अभिव्यक्ति. ये युक्तियाँ अक्सर काफ़ी खतरनाक होती हैं.

फोटो ASIANET-PAKISTAN / SHUTTERSTOCK

ट्रांसजेंडर महिलाओं के लिए शरणस्थलियाँ, पाकिस्तान

पाकिस्तान में प्रायः ट्रांसजेंडरों को उनके परिवार अस्वीकार कर देते हैं और वे भीख मांगकर, नाच-गाकर या वेश्यावृत्ति के माध्यम से जीवनयापन करने के लिए बाध्य होते हैं. आधिकारिक तौर पर कोई पाबंदी न होने के बावजूद ट्रांसजेंडरों को प्रायः धार्मिक संस्थान में प्रवेश करने नहीं दिया जाता.

इस्लामाबाद के बाहरी क्षेत्र में - एक ट्रांसजेंडर महिला - ने इन मानदंडों को चुनौती देते हुए ट्रांसजेंडरों के लिए देश का पहला मदरसा खोला है जहां ट्रांसजेंडरों को सुरक्षित वातावरण में शिक्षा हासिल करने और अपनी आस्थाओं को गहन करने का स्थान मिला है. इसी बीच एक महिला पादरी ने कराची में अपने घर के परिसर में ट्रांसजेंडरों के लिए पहला गिरजाघर खोला क्योंकि गिरजाघर के प्राधिकारियों ने उसे इसके लिए परिसर का उपयोग करने देने से इंकार कर दिया.

> "जब हम अन्य गिरजाघरों में जाते हैं तो हमें प्रवेश करने के पहले अपने बाल कटवाने के लिए कहा जाता है."

स्रोत: gandhara.rflerl.org

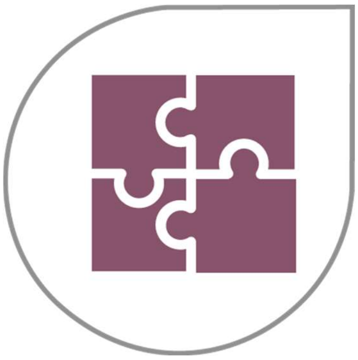

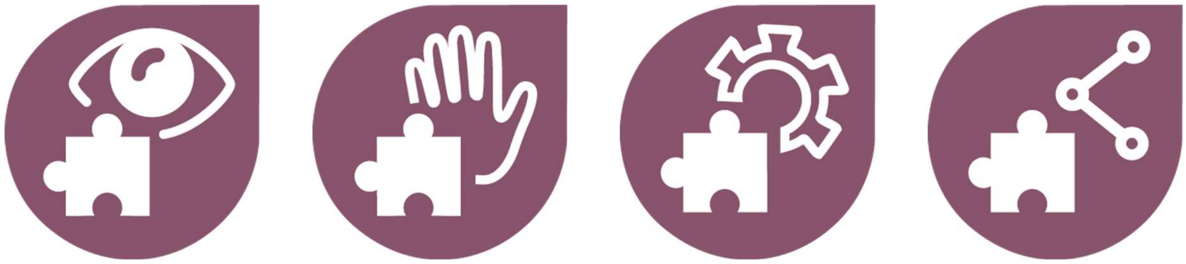

निर्माण की रणनीतियां

निर्माण की रणनीतियां मानव अधिकार की 'संस्कृति' निर्मित करने हेतु किए जाने वाले दीर्घकालीन कार्यों से संबंधित होती हैं. इसका आशय है ऐसा समाज बनाने हेतु कार्य करना जिसमें प्रत्येक व्यक्ति:

- यह जानता है कि हम सभी के मानव अधिकार क्या हैं.
- मानव अधिकार के सम्मान को सामान्य और उचित मानता है
- मानव अधिकार के सम्मान एवं संरक्षण में अपनी भूमिका समझता है उदाहरण के रूप में - एक शिक्षक, पुलिस अधिकारी, जनप्रतिनिधि, व्यापारी या आस्था समुदाय के नेता के रूप में.
- यह जानता है कि अपने और अन्य व्यक्तियों के मानवाधिकारों के लिए कैसे खड़ा हुआ जाना चाहिए और इनका हनन होने पर क्या किया जाना चाहिए.

ऐसी 'संस्कृति' का निर्माण एक दीर्घकालीन प्रक्रिया होती है जिसमें शामिल है सामान्य जनता एवं समाज की समस्त सार्वजनिक एवं निजी संस्थाओं में जागरूकता, सहभागिता, कौशल एवं नेटवर्क का विकास करना. निर्माण की रणनीतियां इस बदलाव हेतु नागरिकों एवं संस्थाओं की जागरूकता, सहभागिता व सशक्तिकरण के माध्यम से अनुकूल परिस्थितियां निर्मित करती हैं.

रणनीति
जागरूकता

समुदाय में सभी को मानव अधिकार के प्रति जागरूक करना इन अधिकारों का पोषण करने वाले समुदाय के निर्माण की दिशा में पहला कदम होता है. प्रायः लोगों को अपने अधिकारों की जानकारी ही नहीं होती - न तो अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप और ना ही देश के कानूनों के मुताबिक. जागरूकता की इस कमी के कारण लोग सरकार, शासक वर्ग या समुदाय के अन्य शक्तिशाली तत्वों द्वारा किए जाने वाले हननों को स्वीकार, सहन या नजरअंदाज करते हैं.

इस रणनीति के अंतर्गत लोगों में निम्न के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जाती है:

- मानव अधिकार के अवधारण
- जो संरक्षण राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को उपलब्ध हैं
- सामुदायिक स्तर पर मानव अधिकार से जुड़े मसले जो आम लोगों के जीवन पर असर डालते हैं.

जागरूकता उत्पन्न करना मानव अधिकार को बढ़ावा देने की सबसे आम रणनीतियों में से एक है. सबसे बड़ी चुनौती लोगों को यह एहसास दिलवाने में मदद करना है कि मानव अधिकार का उनके अपने जीवन में बहुत महत्व है और यह कि मानव अधिकार, दमन और दुर्व्यवहारों पर काबू पाने का एक औजार हो सकते हैं.

फोटो गुइसेपे मास्की (GUISEPPE MASCI) / ALAMY STOCK PHOTO

शांतिस्थापना के लिए जागरूकता, तंज़ानिया

जब कियांगा गाँव के ईसाइयों ने एक चर्च बनाया तो बहुसंख्यक मुस्लिम समुदाय के कुछ लोगों ने विरोध के तौर पर उसके ठीक सामने एक कामचलाऊ मस्जिद खड़ी कर दी, जबकि गाँव में कई मस्जिदें पहले से हैं. चर्च जाने वालों और विरोध के लिए इकट्ठा हुए मुस्लिमों के बीच झगड़े होने लगे और कीचड़ फेंकने से हुई शुरुआत शारीरिक हिंसा में बदल गई.

ज़ांज़ीबार के अन्तर्धार्मिक केन्द्र ने एक गाव में अन्तर्धार्मिक समिति का गठन किया जिसने कई महीनों तक टकराव समाप्त करवाने का प्रयास किया. उन्होंने लोगों को धर्म या आस्था की आजादी के बारे में बताया और उसका महत्व समझाया. अंत में दोनों समुदाय शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए राजी हो गए.

> “यहां ज़ांज़ीबार में बहुधार्मिक समितियां, मुसलमानों एवं ईसाईयों को शांति निर्माण संबंधी शिक्षा प्रदान करने के सघन प्रयास कर रही हैं.”
> *हिदाया दूदे, ज़ांज़ीबार इंटरफेथ सेंटर की एक सदस्य.*

स्रोत: ज़ांज़ीबार इंटरफेथ सेंटर

दालिया और रूएदा नमाज़ पढ़ते हुए.

फोटो टाडूडिया (TAADUDIYA)

सामूहिक प्रार्थना, लेबनान

सन् 2015 में बेरूत की दालिया नामक एक युवा शिया महिला ने शियाओं व सुन्नियों के बीच चल रहे सांप्रदायिक विवाद और विभाजन को चुनौती देने का फैसला किया. उसने फेसबुक पर सवाल पूछा कि क्या कोई सुन्नी महिला उसके साथ शिया और सुन्नी - दोनों मस्जिदों में - प्रार्थना करने को तैयार है. रूएदा नामक एक महिला ने सहमति जताई और दोनों ने सामूहिक रूप से प्रार्थना की और दोनों जगह की तस्वीरें फेसबुक पर साझा कीं.

हालांकि इसकी मिलीजुली प्रतिक्रिया हुई परंतु वे इस सांप्रदायिक विवाद के प्रति जागरूकता लाने और लोगों का ध्यान खींचने में सफल रहीं. नौ महीने बाद मिस्र में रहने वाले एक सऊदी पुरूष ने दालिया से संपर्क किया. वह अपने एक काप्टिक ईसाई मित्र के साथ इसी तरीके को दुहराने के लिए प्रेरित हुआ.

“किसी व्यक्ति को एक ही कदम उठाना होता है. समाज में बदलाव की
शुरूआत एक व्यक्ति से होती है.”
रूएदा

स्रोत: Taadudiya, www.taadudiya.com

रणनीति

लोगों को जोड़ना

इस रणनीति में लोगों को जागरूकता मात्र से आगे बढ़कर सक्रिय होने में मदद दी जाती है. इसके तहत, किसी भी रणनीति का उपयोग करके ऐसे लोगों की संख्या बढ़ाई जाती है जो मानव अधिकार को बढ़ावा देने के लिए बोलने और कदम उठाने को तैयार हों. इसमें, लोगों के लिए उन्हें दिखे उल्लंघनों पर प्रतिक्रिया देने या उनकी रिपोर्ट करने में शामिल होने के रास्ते तैयार करना, लोगों को प्रचार-अभियान गतिविधियों से जोड़ना या समुदाय में जागरूकता फैलाने वाले कार्यक्रमों अथवा पीड़ितों को मनोसामाजिक तथा माली सहायता प्रदान करने वाले कार्यक्रमों में स्वयंसेवा करने हेतु लोगों को प्रोत्साहित करना शामिल हो सकता है.

फोटो PROSTOCK-STUDIO / SHUTTERSTOCK

लोगों को एकजुटता प्रदर्शित करने के लिए सक्रिय करना, कनाडा

हाल के वर्षों में सारी दुनिया में धार्मिक स्थलों पर हमलों की घटनाएं बढ़ी हैं. क्यूबैक में एक मस्जिद पर हमले के बाद टोरंटो (कनाडा का एक और शहर) में स्थानीय यहूदी उपासनागृहों, गिरजाघरों एवं मंदिरों से जुड़े लोगों ने एकजुटता दिखाने के लिए मस्जिदों पर 'शांति के घेरे' डाल दिए. इस विचार की प्रेरणा लोगों को उन मुस्लिम युवकों से मिली जिन्होंने पड़ोसी डेनमार्क में एक यहूदी उपासना स्थल पर हुए हमले के बाद नार्वे में एक यहूदी उपासना स्थल को शांति के घेरे में लिया था.

> “मुस्लिम समुदाय की चिंता कारने वाले बाहर खड़े यहूदी, ईसाई और अन्य समुदायों के और किसी भी आस्था से न जुड़े लोगों को देखना वाकई आश्वस्त करने वाला है.”
> *इल्यास एली, सहायक इमाम, इस्लामिक इन्फ़ॉर्मेशन एंड दावह सेंटर, टोरंटो*

स्रोत: CBC News

रणनीति
कौशल

अक्सर, नेकनीयत लोगों में मानव अधिकार को बढ़ावा देने के कौशल या आत्मविश्वास की कमी होती है. यह बात उन आम लोगों पर लागू है जिन्हें समुदाय में अधिकारों को बढ़ावा देने के काम में लगने के लिए कौशलों और आत्मविश्वास की ज़रूरत है. लेकिन यह बात सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों पर तथा व्यवसायों और समुदाय के नेताओं तथा धार्मिक नेताओं पर भी लागू होती है, क्योंकि उन पर सामुदायिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के ठीक से काम करने की और ऐसी परिस्थितियों की ज़िम्मेदारी होती है जिनमें लोग अधिकार-हनन के प्रति असुरक्षित हो सकते हैं.

कई बार मानव अधिकार का हनन इसलिए जारी रहता है क्योंकि सामुदायिक नेता एवं अधिकारी उसी प्रकार से कार्य करते रहते हैं “जिस प्रकार से हमेशा से होता आया है” और यह नहीं जानते कि अलग ढंग से काम कैसे किया जा सकता है - इस तरह से जिससे अधिकारों की रक्षा हो. लोगों का कौशल बढ़ाना और नए, व्यावहारिक व यथार्थवादी तरीकों को खोजना, जिनसे लोगों का नुकसान से बेहतर संरक्षण हो सके, परिवर्तन हेतु महत्वपूर्ण रणनीति है.

एक मूलनिवासी महिला एक पारंपरिक उत्सव में भाग लेते हुए, मेक्सिको. फोटो ARTERRA PICTURE LIBRARY / ALAMY STOCK PHOTO

अधिकारों के बचाव के कौशल सीखना, मेक्सिको

द नेटवर्क ऑफ़ कम्युनिटी ह्यूमन राइट्स डिफ़ेंडर्स मूलनिवासी समुदाय के उन सदस्यों को गरीब ग्रामीण समुदायों के मानव अधिकार की निगरानी और बचाव के लिए प्रशिक्षित करता है जिन्हें वे समुदाय चुनते हैं. उन्हें मानव अधिकार का और व्यावहारिक कौशलों, जैसे फोटोग्राफी और कंप्यूटर उपयोग, का प्रशिक्षण दिया जाता है.

जब हनन होते हैं तब वे वीडियो एवं फोटो के माध्यम से साक्ष्य एकत्रित करते हैं, सरकार तक शिकायतें पहुंचाते हैं व प्रेस तथा मानव अधिकार की निगरानी करने वाले समूहों को सूचित करते हैं. वे अन्यायपूर्ण ढंग से हिरासत में लिए गए लोगों को रिहा करने की मांग करते हैं. मानवाधिकार का उल्लंघन के आसन्न खतरों की स्थिति में एहतियाती कदम उठाये जाना के लिए अनुरोध करना भी उन्हें आता है. इनका अनुभव यह दर्शाता है कि हाशिए पर पड़े समुदायों को भी उनके अपने अधिकारों के बचाव संबंधी कदमों में शामिल किया जा सकता है.

स्रोत: न्यू टैक्टिक्स इन ह्यूमन राइट्स, www.newtactics.org

रणनीति

नेटवर्क्स

शोध यह बताता है कि सबसे प्रभावी बदलाव तब हासिल होते हैं जब व्यक्ति एवं संगठनों का नेटवर्क किसी साझे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए
समन्वित, संयुक्त एवं पूरक कदम उठाता है. एक ही समुदाय के व्यक्तियों एवं संस्थाओं के नेटवर्क बनाए जा सकते हैं, किंतु स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक और राष्ट्रीय स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक के नेटवर्क भी बनाए जा सकते हैं.

विभिन्न समुदायों या सेक्टरों के बीच मैत्री-संबंध बनाने - जैसे, व्यापारी समुदाय के साथ या धार्मिक समुदायों के बीच मैत्री-संबंध बनाने - से नए प्रकार के प्रभावों का निर्माण हो सकता है. नेटवर्क जितना विस्तृत होगा, वह उतने ही अधिक प्रकार के कदम उठा पाएगा और उसका प्रभाव तथा वैधता भी उतनी ही अधिक होगी. नेटवर्क, मानव अधिकार के लिए कार्यरत व्यक्तियों और संगठनों को महसूस होने वाले अलगाव को तोड़ने तथा उन व्यक्तियों व संगठनों के लिए मौजूद जोखिमों को घटाने में भी मदद कर सकते हैं.

नेटवर्क के सदस्य संयुक्त राष्ट्रसंघ, जिनेवा में कूटनीतिज्ञों से बातचीत करते हुए. **फोटो** IRAQI WOMEN'S NETWORK

महिलाओं के अधिकारों के लिए नेटवर्किंग, इराक

सन् 2004 में ईराक के नए संविधान का मसौदा तैयार होने के दौरान ईराकी सर्वोच्च न्यायालय ने डिक्री 137 को इसमें शामिल किये जाने का प्रस्ताव किया, जिसके अंतर्गत शरिया न्यायशास्त्र को निजी नागरिक कानूनों का आधार बनाया जाना था. ईराकी विमेंस नेटवर्क, 100 से अधिक नागरिक समाज संगठनों का राष्ट्रव्यापी समूह है. यह तर्क देते हुए कि यह डिक्री भेदभाव को संस्थागत स्वरूप देती है और बाल विवाह व ऑनर किलिंग को वैधता प्रदान करेगी, नेटवर्क ने विरोध और समर्थन का एक विशाल समन्वित अभियान चलाया जो इस प्रावधान के वापिस लिए जाने पर ही समाप्त हुआ. आज वे महिलाओं की उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने, स्थानीय एवं राष्ट्रीय चुनावों में खड़े होने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने और उन्हें राजनीतिक अभियान चलाने हेतु प्रशिक्षण देने का कार्य कर रही हैं.

> "मिलकर काम करने से हमें वास्तविक शक्ति मिलती है. इससे हम अपने अधिकारों के लिए ज्यादा जोर से आवाज उठा सकते हैं और यह हमें वास्तविक न्याय हासिल करने में मदद करता है." *अमल काबाशी, समन्वयक, ईराकी वीमेन्स नेटवर्क*

स्रोत: विमेन्स इंटरनेशनल लीग फ़ॉर पीस एंड फ़्रीडम, www.wilpf.org

छत्तीसगढ़ में पानी के पम्प के पास खड़ी महिलाएं.

फोटो जोअर्ग बोएथलिंग (Joerg Boethling) / Alamy Stock Photo

FORB की रक्षा, छत्तीसगढ़, भारत

धर्म या आस्था की आजादी पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के बाद भारत के छत्तीसगढ़ में लगभग 25 व्यक्तियों ने एक समूह का गठन किया जिसकी बैठकें नियमित रूप से होती हैं और जो राज्य के ईसाई समुदायों के धर्म या आस्था की आजादी के अधिकार के संरक्षण का कार्य करता है.

भारत के ग्रामीण इलाकों में धार्मिक अल्पसंख्यक आम तौर पर सामाजिक बहिष्कार का सामना करते हैं. छत्तीसगढ़ में एक नव-मतांतरित ईसाई को गाँव छोड़ने पर मज़बूर करने के लिए गाँव के लोगों ने सभा करके उसका हुक्का-पानी बंद करने का फ़ैसला लिया जिससे उसे काफ़ी परेशानियाँ होने लगीं. इसका पता चलने पर समूह ने स्थानीय ग्रामीणों से संपर्क किया और उस पुरुष को संविधान द्वारा प्रदत्त आज़ादियों की गारंटी के बारे में बताया तथा इस बात पर ज़ोर दिया कि लोगों को उनके धर्म के कारण निशाना बनाना गैर-कानूनी है. सुरक्षा के लिए और घटनाक्रम की रिपोर्ट करने के लिए समूह ने पुलिस भी बुला ली. अंत में, ग्रामीणों ने अपना फ़ैसला रद्द कर दिया.

स्रोत: स्टीफ़ेनस अलाइंस इंटरनेशनल, www.stefanusalliansen.no

उपचारात्मक रणनीतियां

मानव अधिकार से संबंधित दुर्व्यवहार का प्रभाव, उस दुर्व्यवहार के कारण उसी समय हुए कष्ट से कहीं अधिक लंबे समय तक रहता है. सदमे के कारण, उल्लंघन से पैदा हुईं आर्थिक मुसीबतों के कारण और भरोसा टूटने के कारण ज़िंदगियाँ और पूरे-के-पूरे समुदाय छिन्न-भिन्न हो जाते हैं. उपचारात्मक रणनीतियां इस बात से सरोकार रखती हैं कि उल्लंघन हो चुकने के बाद घाव भरने तथा न्याय और मेल-मिलाप हासिल करने में हम व्यक्तियों और समुदायों की मदद के लिए क्या कर सकते हैं.

इन रणनीतियों में शामिल है व्यावहारिक सहायता जैसे सुरक्षित आवास या परामर्श सेवाएं उपलब्ध करवाना, हननों का दस्तावेजीकरण करना ताकि उनकी लीपा-पोती न की जा सके, वैधानिक प्रक्रिया के लिए साक्ष्य जमा करना, पीड़ितों को शीघ्र न्याय एवं मुआवजा दिलवाने का प्रयास करना और हननों को याद करना शामिल है.

यद्यपि ये रणनीतियां अतीत में घटी घटनाओं पर केन्द्रित हैं परन्तु भविष्य में होने वाले हननों को रोकने में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है. वे टूटे हुए समुदाय को दृढ़ता प्रदान करती हैं, यह सुनिश्चित करतीं हैं कि दंड न मिलने से दोषियों की हिम्मत और न बढ़ जाए और पीड़ितों और उनके परिवारों को हुए कष्ट को स्वीकार करने एवं याद करने की गुंजाइश बनातीं हैं.

रणनीति
भौतिक एवं मनोसामाजिक सहायता

मानवाधिकार का उल्लंघन का अनुभव करने वाले लोगों को तत्काल और दीर्घकालिक सहायता की आवश्यकता हो सकती है. किस प्रकार के समर्थन की आवश्यकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या हुआ है. उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति को सदमे की स्थिति में अपने साथ बैठने के लिए किसी व्यक्ति, चिकित्सा देखभाल या रहने के लिए सुरक्षित स्थान की आवश्यकता हो सकती है; हिंसा से विस्थापित लोगों को अस्थायी आवास और भोजन की आवश्यकता हो सकती है; तथा आघात से पीड़ित लोगों को दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक सहायता की आवश्यकता हो सकती है.

लोगों की देखभाल के लिए आवश्यक कई संसाधन समुदाय के अनौपचारिक आंतरिक नेटवर्क से प्राप्त हो सकते हैं. देखभाल की इन अनौपचारिक सहायता प्रणालियों का समुदाय की अघात से उभरने की क्षमता में योगदान हो सकता है. साथ ही यह मांग करना भी महत्वपूर्ण है कि सरकार अपने उन नागरिकों की देखभाल की जिम्मेदारी निभाए जिनके अधिकारों का हनन हुआ है.

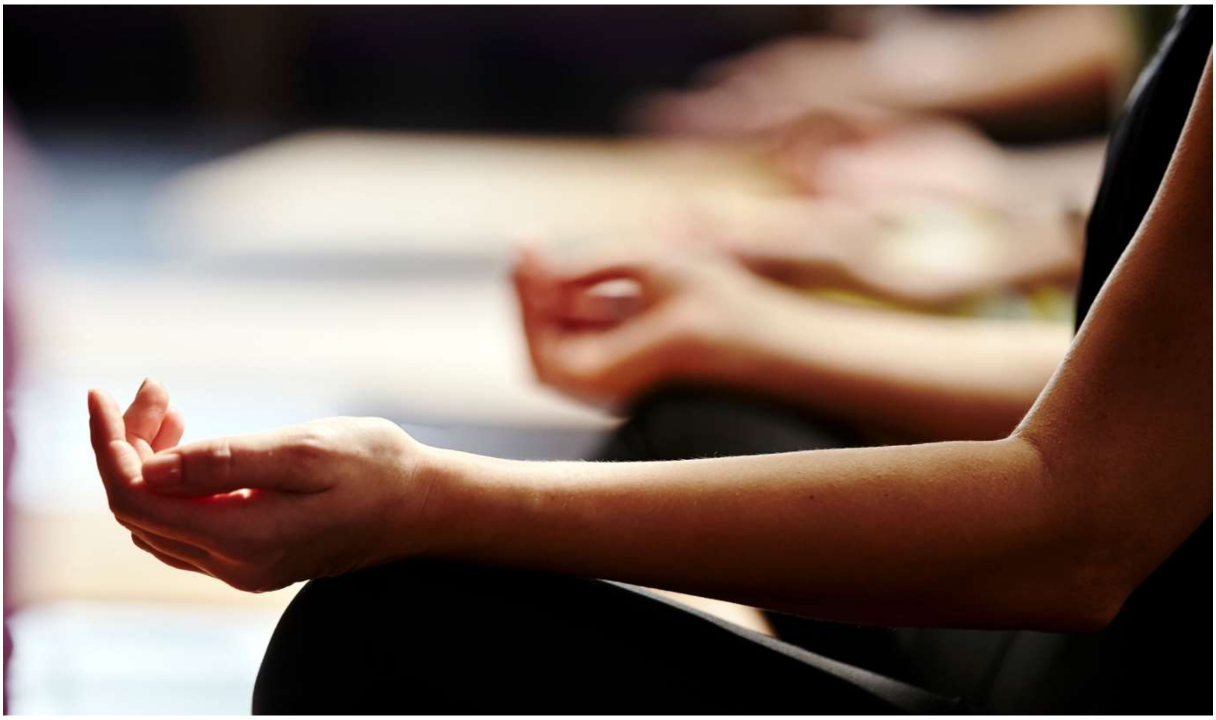

फोटो डेनिस स्मर्नोव (DENYS SMYRNOV) / ALAMY STOCK PHOTO

ISIL के हमलों में बचे लोगों के लिए योग और दोस्ती, इराक

यज़ीदी लोग उत्तरी इराक में रहने वाला एक नृजातीय-धार्मिक समुदाय हैं जिनका धर्म इस्लाम-पूर्व, इस्लामी, ईसाई और ज़ोरोएस्ट्रियन परंपराओं से प्रभावित है. यज़ीदियों पर सदियों से अत्याचार हो रहे हैं, सबसे हालिया अत्याचार इस्लामिक स्टेट (ISIL) द्वारा किए जा रहे हैं.

2014 में ISIL के लड़ाकों ने अज़ीज़ा को बंदी बना लिया और उसे इस्लाम अपनाने पर मज़बूर किया. 4 वर्षों बाद वह भागने में सफल रही पर वह अब सदमे के बाद के तनाव से ग्रस्त है और अपने परिवार, जिसमें से अधिकांश लोग जान बचाकर जर्मनी भाग गए, के बिना जीना उसे बहुत कठिन महसूस होता है. 2019 में वह WEPO नामक एक स्थानीय NGO द्वारा संचालित योग कक्षा में जाने लगी. ये कक्षाएँ विस्थापित महिलाओं के लिए एक शरणस्थली हैं जहाँ वे आराम कर सकती हैं, अपनी भावनाओं पर बात कर सकती हैं और अपने नए माहौल में दोस्त बना सकती हैं.

> “यह हमें अपने असली हालातों से दूर ले जाने में मददगार है. मैंने यहां कई मित्र बनाए.” *अज़ीज़ा*

स्रोत: www.kurdistan24.net

रणनीति
उल्लंघनों का दस्तावेज़ीकरण करें

हननों का दस्तावेज़ीकरण करने में मानवाधिकार का उल्लंघन एवं उनके नतीजों का एक स्थायी, सार्वजनिक अभिलेख बनाना शामिल होता है. इसका अर्थ है कि किसी विशिष्ट घटना के दौरान क्या हुआ इसका विवरण रखना या किसी ऐसे कानून, नीति या कार्यपद्धति के नकारात्मक प्रभाव का दस्तावेज़ीकरण, जो भेदभावपूर्ण हो या अधिकारों को सीमित करता हो या अधिक व्यापक स्वरूप में उनका उल्लंघन करता हो.

दस्तावेज़ीकरण यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि मानवाधिकार के उल्लंघन की घटनाओं को छिपाया न जा सके. दस्तावेज़ीकरण कई अन्य रणनीतियों का भी महत्वपूर्ण आधार होता है. घटनाओं के विवरण एवं एकत्रित किए गए साक्ष्य के निम्न उपयोग हो सकता हैं:

- न्यायिक प्रक्रिया के माध्यम से पीड़ितों को न्याय एवं मुआवजा दिलवाने के लिए
- पीड़ितों की यह याद रखने में मदद करने के लिए कि उनके साथ क्या हुआ था
- निर्णयकर्ताओं को हननों के मूल कारणों से निपटने हेतु राजी करने हेतु पक्षपोषण हेतु आधार के रूप में
- समस्याओं के संबंध में जनता की जागरूकता बढ़ाने एवं लोगों को अभियानों में भाग लेने के लिए एकजुट करने हेतु.

PRVI स्वयंसेवक अपने कार्य पर चर्चा करते हुए. **फोटो** नाहला सेंटर फ़ॉर एजुकेशन एंड रिसर्च

घृणाजनित अपराधों का दस्तावेज़ीकरण, बोस्निया हर्जेगोविना

1995 में बोस्नियाई युद्ध की समाप्ति पर, देश का धार्मिक परिदृश्य नाटकीय रूप से बदल गया था. कई इलाके, जो पहले मुस्लिम-बहुल थे, वे ईसाई-बहुल हो गए और इसका उलट भी हुआ. नस्लीय और धार्मिक तनाव आज भी बना हुआ है, और जो लोग अपने मूल निवास के इलाकों में लौटे हैं वे विशेष रूप से असुरक्षित हैं. PRVI ऐसे स्वयंसेवकों का एक समूह है जो धर्म या आस्था की आजादी के उल्लंघन के दस्तावेज़ीकरण के लिए भरोसेमंद स्थानीय व राष्ट्रीय मीडिया की रिपोर्टों का उपयोग करता है. वे घटनाओं का वर्गीकरण और संकलन करके एक वार्षिक सूची बनाते हैं और वह सूची बोस्निया के अधिकारियों व मीडिया को तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को भेजते हैं. स्वयंसेवकों का मानना है कि देश और विदेश में घटनाओं पर प्रकाश डालने से बदलाव का दबाव बनाया जा सकता है.

> "मैं समझती हूं कि हमारे कार्यों का प्रभाव पड़ता है, भले ही वे कितने ही छोटे नजर आएं."
> *ईमीना PRVI कार्यकर्ता*

स्रोत: एमिना फ़र्लजाक, PRVI और नाहला सेंटर फ़ॉर एजुकेशन एंड रिसर्च

शान राज्य, म्याँमार के एक गाँव में मुस्लिमों के प्रवेश के अधिकार पर प्रतिबंध दर्शाता एक संदेश बोर्ड. **फोटो** BHRN

उल्लंघनों का दस्तावेज़ीकरण, म्याँमार

बर्मा ह्यूमन राइट्स नेटवर्क (BHRN) एक ज़मीनी संगठन है जो म्याँमार में मुस्लिमों और अन्य धार्मिक अल्पसंख्यकों की स्थिति पर प्रकाश डालने का काम करता है. 2016 में BHRN के कार्यकर्ताओं ने पूरे देश से सैकड़ों लोगों की गवाहियाँइकट्ठी कीं. निष्कर्षों में मुसलमानों को पहचान पत्र हासिल करने से रोकने, नष्ट एवं क्षतिग्रस्त हुई मस्जिदों का प्राधिकारियों द्वारा पुनर्निर्माण न होने देने एवं उन गांवों की संख्या में तेजी से वृद्धि होने का जिक्र है जिनमें मुसलमानों के प्रवेश पर पाबंदी लगा दी गई है. उन्होंने 120,000 रोंहिग्या मुसलमानों को जिन हालातों का सामना करना पड़ रहा है, उसका भी दस्तावेजीकरण किया है. इन्हें आंतरिक विस्थापन के फलस्वरूप शरणार्थी शिविरों में रहना पड़ रहा है जहां इनके आने-जाने व चिकित्सा व शिक्षा सुविधाओं तक पहुंच पर पाबंदियां हैं. सन् 2016 और 2017 में रोंहिग्या मुसलमानों के विरूद्ध हिंसा और उनका उत्पीड़न बहुत बढ़ गया जिसके नतीजे में लगभग 8 लाख रोंहिग्याओं को भागकर पड़ोसी बांग्लादेश में शरण लेनी पड़ी.

स्रोतः बर्मा ह्यूमन राइट्स नेटवर्क, www.bhrn.org.uk

रणनीति
न्याय और मुआवजा माँगें

यह सुनिश्चित करना राज्य का दायित्व है कि यदि लोगों के अधिकारों का उल्लंघन हो तो वे न्याय पा सकते हों. पीड़ितों और उनके परिवारों को मुआवजा देने और दुर्व्यवहार करने वालों को सज़ा देने या शर्मसार करने से जो गलत हुआ उसे ठीक तो नहीं किया जा सकता है, पर ऐसा करने से एक महत्वपूर्ण कार्य की पूर्ति अवश्य होती है. मुआवजा से पीड़ितों को अपने पैरों पर फिर खड़े होने में मदद मिल सकती है, वहीं सज़ाओं से यह स्पष्ट संदेश जाता है कि अधिकारों के उल्लंघन सहन नहीं किए जाएँगे, जिससे समाज में अक्सर मौजूद सज़ा-माफ़ी की संस्कृति से लड़ने में मदद मिलती है.

यह रणनीति पीड़ितों को न्याय व मुआवजा पाने हेतु कानूनी तंत्र का उपयोग करने में मदद देने पर आंशिक रूप से केंद्रित है - जैसे अपराधों की रिपोर्ट करने की प्रक्रिया में उनका साथ देना या कानूनी सलाह और सहायता प्रदान करना. लेकिन, अन्याय के विरुद्ध कदम कानूनी ढाँचों के बाहर भी उठाए जा सकते हैं. दुर्व्यवहारों को सबके सामने लाने और दोषियों को जवाबदेह ठहराने के कई रचनात्मक तरीके मौजूद हैं - जैसे मीडिया या सोशल मीडिया का उपयोग करना.

काओ दाई धर्म का एक अनुष्ठान.

फोटो All Canada Photos / Alamy Stock Photo

हमले का शिकार हुए लोगों की विधिक सहायता, वियतनाम

वियतनाम में धार्मिक गतिविधियों पर सरकार का सख्त नियंत्रण है. वहां सरकार के प्रति वफादार धार्मिक समुदाय बनाए गए हैं और लोगों से अपेक्षा की जाती है कि वे उनका अनुसरण करें. जो लोग स्वतंत्र धार्मिक समुदायों के माध्यम से अपने धर्म का अनुपालन करते हैं उन्हें उत्पीड़ित किया जा सकता है. एक स्वतंत्र काओ दाई अनुयायी महिला और साथी काओ दाई अनुयायियों ने अपने मंदिर को कब्ज़े से बचाने के लिए सरकार द्वारा प्रतिबंधित एक काओ दाई समूह का विरोध किया; इस पर उस प्रतिबंधित समूह के लोगों ने उस महिला पर हमला कर दिया; उस महिला की पैरवी के लिए वियतनामी प्रवासियों के एक संगठन BPSOS ने एक वकील किया. फलस्वरूप उस महिला को कानूनी तंत्र के ज़रिए आर्थिक मुआवजा मिला और सरकार द्वारा प्रतिबंधित उस काओ दाई समूह ने कब्ज़े की अपनी कोशिशें बंद कर दीं. यह न केवल उस महिला की जीत थी बल्कि देश में धर्म या आस्था की आजादी के लिए एक आशाजनक संदेश भी था, यह देखते हुए कि वियतनाम की न्यायपालिका राजनीति से अत्यधिक ग्रस्त है.

स्रोत: BPSOS, www.bpsos.org

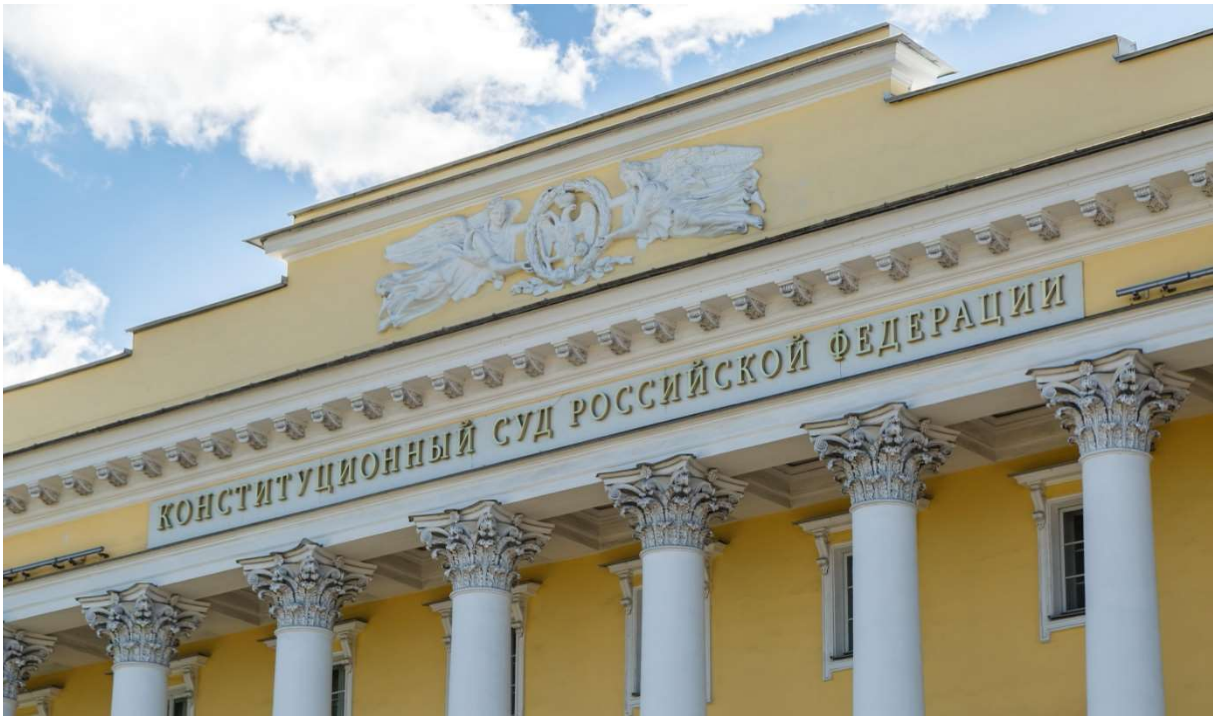

रूस का संवैधानिक न्यायालय.

फोटो ओलेग बेलोव (OLEG BELOV) / ALAMY STOCK PHOTO

उपासना पर जुर्माने को न्यायिक चुनौती, रूस

रूस में कानून लागू करने वाली संस्थाएं उन धार्मिक समुदायों, जो प्रार्थना के लिए घरों में इकठ्ठा होते हैं, पर इस आरोप में प्रशासनिक जुर्माने लगाती हैं कि “यह भूखंड का दुरूपयोग है.”

सन् 2019 में धर्म या आस्था की आजादी संबंधी मामलों में विशेषज्ञता प्राप्त वकीलों ने एक ऐसे समुदाय का सफलतापूर्वक बचाव किया जिसने इन जुर्मानों का विरोध किया. संवैधानिक न्यायालय ने सर्वसम्मति से फैसला दिया कि धार्मिक संगठनों को बिना किसी बाधा के आवसीय परिसरों में प्रार्थना एवं धार्मिक कर्मकांड करने का अधिकार है. इस फैसले से धार्मिक स्थलों के रूप में मान्यता प्राप्त भवनों के बाहर आराधना करने के संबंध में रूस की न्याय प्रणाली के रुख का संकेत मिला. यह धर्म या आस्था की आजादी के संरक्षण के क्षेत्र में एक नजीर है.

स्रोत: स्लाविक सेंटर फ़ॉर लॉ एंड जस्टिस, www.sclj.ru

रणनीति
याद करें

कभी-कभी मानव अधिकार के उल्लंघन के बाद एक सामूहिक शांति छा जाती है. प्राधिकारी प्रभावशाली अपराधियों या स्वयं को बचाने के लिए उल्लंघनों को छिपाने का प्रयास कर सकते हैं, समुदाय के नेता सोच सकते हैं कि खुलकर उल्लंघनों की बात करने की बजाए सद्‌भाव की बात करना बेहतर है और यौन हिंसा के पीड़ित शर्म की संस्कृति के कारण चुप्पी ओढ़े रह सकते हैं.

जिन घावों का शीघ्र उपचार नहीं होता वे नासूर बन जाते हैं. आघात से उबरने की क्षमता रखने वाले, न्याय और सामंजस्य पूर्ण समुदाय तभी संभव हैं जब हम यह स्वीकार करें कि अन्याय हुआ है, पीड़ितों को अपनी बात कहने का मौका दें और अपराधियों को अपनी गलती मानने और सुधरने का वादा करने का अवसर दें. टकराव की स्थितियों में सामान्यतः सभी 'पक्षों' में अपराधी और पीड़ित दोनो
होते हैं.

याद करना कई प्रकार से हो सकता है. जैसे वार्षिक स्मरण आयोजन, जन सुनवाई, जिसमें घटनाओं से जुड़े व्यक्ति अपने अनुभव बताएं, फोटो, कहानियां एवं अभिलेखों की प्रदर्शनी या सड़क पर कला एवं संगीत प्रदर्शन.

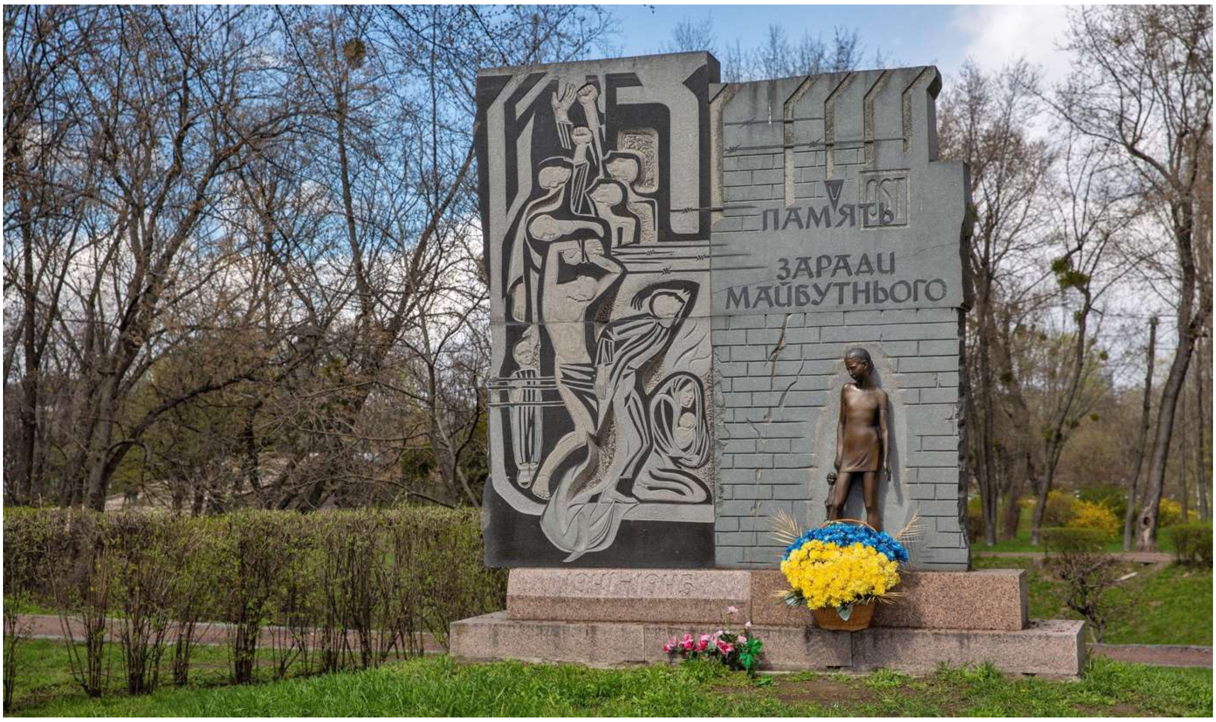

बेबियन यार के नाज़ी नरसंहार के शिकार लोगों का स्मारक. फोटो सेरजी पलामर्चक (SERGIY PALAMARCHUK) / ALAMY STOCK PHOTO

होलोकॉस्ट का स्मरण, यूक्रेन

सन 1941 के 29-30 सितम्बर को यूक्रेन की बेबियन यार घाटी में 33,771 यहूदियों की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी. सोवियत काल में इस नरसंहार को स्वीकार नहीं किया गया लेकिन उसके बाद उसका स्मारक बनाया गया और हर साल उसे याद किया जाता है.

यूक्रेनियन जूइश एनकाउंटर एक NGO है जो एक साझा ऐतिहासिक गाथा - यूक्रेन-यहूदी संबंधों का एक सच्चा ऐतिहासिक वर्णन - निर्मित करने के लिए और ऐतिहासिक घावों को भरने (जैसे, यूक्रेन में युद्ध से पहले के यहूदी जीवन के बारे में जागरूकता बहाल करने के द्वारा) के लिए काम करती है. नरसंहार की 75वीं बरसी पर UJE ने सप्ताह भर चलने वाली गतिविधियाँ आयोजित कीं, जिनमें शामिल था एक युवा सम्मेलन, एक सार्वजनिक संगोष्ठी और नरसंहार की स्मृति में एक संगीत-समारोह.

स्रोत: यूक्रेनियन जूइश एनकाउंटर, ukrainianjewishencounter.org